

শ্রীঃ  
শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ  
শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায় নমঃ  
শ্রীসীতালক্ষ্মণভরতশক্রহনুমৎসমেত শ্রীরামচন্দ্র পরব্রহ্মণে নমঃ

শ্রীমদ্রামায়ণে রাল্মীকীযে আদিকাৰ্যে কিঙ্কিকাকাণ্ডে

॥ একষষ্টিতমঃ সৰ্গঃ ॥

*This document has been prepared by*

*Sunder Kidāmbi*

*with the blessings of*

শ্রী রঙ্গরামানুজ মহাদেশিকন্

*His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam*

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः  
श्रीसीतालम्बुणभरतशङ्करहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

## ॥ एकषष्टितमः सर्गः ॥

सम्पातिना निशाकरमुनिं प्रति स्वपुञ्जदाहकारणस्य वर्णनम्

ततस्तद् दारुणं कर्म दुष्करं सहसा कृतम्।  
आचक्ष्मे मुनेः सर्पं सूर्यानुगमनं तथा ॥ 4.61.1 ॥

भगवन् ब्रह्मयुक्तंराल्लज्जया चाकुलेन्द्रियः।  
परिश्रान्तो न शक्नोमि रचनं परिभाषितुम् ॥ 4.61.2 ॥

अहं चैव जटायुश्च सङ्घर्षाद् गर्भमोहितौ।  
आकाशं पतितौ दुराज्जिज्ञासन्तौ पराक्रमम् ॥ 4.61.3 ॥

कैलासशिखरे बद्ध्वा मुनीनामग्रतः पणम्।  
रविः स्यादनुयातव्यो यारदस्तं महागिरिम् ॥ 4.61.4 ॥

अप्यारां युगपत् प्राप्तारपश्यात् महीतले।  
रथचक्रप्रमाणानि नगराणि पृथक् पृथक् ॥ 4.61.5 ॥

क्वचिद् रादित्रयोषश्च क्वचिद् भूषणनिःस्वनः।  
गायन्तीः स्माङ्गना बह्वीः पश्यारो रक्तवाससः ॥ 4.61.6 ॥

तूर्णमुत्पत्य चाकाशमादित्यपदमास्थितौ।  
आरामालोकयारस्तद् रनं शान्दलसंस्थितम् ॥ 4.61.7 ॥

উপলৈরির সঙ্ক্ৰনা দৃশ্যতে ভূঃ শিলোচ্চযৈঃ।  
আপগাভিশ্চ সংরীতা সূত্রৈরির রসুন্ধরা ॥ 4.61.8 ॥

হিমরাংশৈচর ঝিক্যশ্চ মেরুশ্চ সুমহাগিরিঃ।  
ভূতলে সম্প্রকাশন্তে নাগা ইর জলাশযে ॥ 4.61.9 ॥

তীব্রঃ স্নেদশ্চ খেদশ্চ ভযং চাসীং তদারযোঃ।  
সমারিশত মোহশ্চ ততো মুচ্ছা চ দারুণা ॥ 4.61.10 ॥

ন চ দিগ্ জ্জায়তে যাম্যা ন চাগ্নেযী ন বারুণী।  
যুগান্তে নিযতো লোকো হতো দন্ধ ইরাগ্নিনা ॥ 4.61.11 ॥

মনশ্চ মে হতং ভূযশ্চক্ষুঃ প্রাপ্য তু সংশ্রযম্।  
যত্নেন মহতা হ্যস্মিন্ মনঃ সন্ধায় চক্ষুযী ॥ 4.61.12 ॥

যত্নেন মহতা ভূযো ভাস্করঃ প্রতিলোকিতঃ।  
তুল্যপৃথ্বীপ্রমাণেন ভাস্করঃ প্রতিভাতি নৌ ॥ 4.61.13 ॥

জটায়ুর্মামনাপৃচ্ছ্য নিপপাত মহীং ততঃ।  
তং দৃষ্টরা তূর্ণমাকাশাদাত্মানং মুক্তরানহম্ ॥ 4.61.14 ॥

পক্ষাভ্যাং চ মযা গুপ্তো জটায়ুর্ন প্রদহ্যত।  
প্রমাদাং তত্র নির্দন্ধঃ পতন্ রাখুপথাদহম্ ॥ 4.61.15 ॥

আশঙ্কে তং নিপতিতং জনস্থানে জটায়ুষম্।  
অহং তু পতিতো ঝিক্যে দন্ধপক্ষো জডীকৃতঃ ॥ 4.61.16 ॥

রাজ্যাচ্চ হীনো ভ্রাত্ৰা চ পক্ষাভ্যাং ঝিক্রমেণ চ।  
সরথ্যা মর্তুমেরেচ্ছন্ পতিষ্যে শিখরাদ্ গিরেঃ ॥ 4.61.17 ॥

॥ ইত্যার্ষে শ্রীমদ্রামায়ণে বাল্মীকীযে আদিকাৰ্যে  
কিঙ্কিকাকাণ্ডে একষষ্টিতমঃ সর্গঃ ॥